Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

वैश्वीकरण की दौर मैं भाषाओ की भूमिका

प्रशांत पटेल*

वैश्वीकरण के दौर मैं हिंदी

हिंदी की वैश्विक भूमिका असल मैं उसकी भारत मैं भूमिका का ही विस्तार हैं। और भारत मे हिंदी की भूमिका अब भी आम आदमी के सपने और हकीकत के बीच हिचकोले खाती भाषा की हैं। हिंदी का हिचकोला दरअसल राज्याश्रय और लोकाश्रय के बीच का हैं।राज्याश्रय इसलिए की स्वतंत्र भारत का संविधान उसे संधीय सरकार की राजभाषा के रूप मैं संरक्षण देता हैं। मगर अंग्रेज़ियत वाली मानसिकता उसे अवसर ही नहीं देती की वह फल-फूल सके। फिर भी, लोकाश्रय हिंदी का स्वभाव हैं, उसकी बुनियाद हैं, जिसे वह छोड़ नहीं सकती।

दरअसल, हिंदी के प्रसार और विकाश की ताकत उसके संम्मिश्र स्वभाव मैं हैं। इशी के बल पर हिंदी जब तत्सम से सजती-सँवरती हैं तो विद्व्त समाज की जुबान बनती हैं, उर्दू से मिल कर भारतीय उपमहाद्वीप के कोने-कोने मे बोली समजी जाती हैं और देसी भाषाओ और बोलियो के शब्दो को अपना कर देश-दुनिया की सुदूर क्षेत्रो मे जानी-पहचानी जाती हैं। कहना न होगा की हिंदी का यह स्वभाव उसे एक व्यापक और आज के विश्वगरम मे वैश्विक भूमिका पर ला खड़ा करता हैं।

ऐसा इसलिए भी की हिंदी आज जिन लोगो मैं व्यवहार होती हैं, जिस आवाम की जुबान हैं, वह दुनिया का सबसे युवा और संभवनशील हैं। उसके विकाश का पहिया आज जिस रफ्तार से घूम रहा हैं, उसमे आत्मनिर्भरता और आतमसनमान की आकांशा और समर्थय हैं। उस रफ्तार मैं विश्व राजनीति के केंद्र मैं पाहुचने की हसरत हैं। और आम आदमी के श्रम से संपोषित यह सब भारत की भूमिका बड़ी हो गई हैं।

---

*प्रशांत पटेल, चिरवली कॉलेज

वैश्विकीकरण के मोजूद दौर मैं भारतीय बाज़ार की ताकत जैसे-जैसे बढेगी, भारतीय भाषा और हिंदी की भूमिका व्यापक होगी। वैश्विकरण का यह युग एकतरह का कंपनी युग हैं। इस युग में औधोगिक उत्पाद, उपभोगता, बाज़ार और टेक्नालजी का सर्वथा नया संबंध बन रहा

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

हैं। इसमे देसी या राष्ट्रिय कुछ भी नहि हैं। सब कुछ बहुराष्ट्रीय हैं। पर इस बहुराष्ट्रीय की ज़ुबान वहीं हैं, जो हमारी आपकी जुबान हैं। यानि वैश्विकरण के दौर मैं हमारे बीच जो चिजे बिक रही हैं वो दिनीय के किसी भी हिस्से का उत्पादन हो सकती हैं, पर बिक रही हैं हमारी भाषा मैं।

भारत के परिप्रेक्ष्य में यह भाषा हिंदी हैं। समय के अंतराल मैं कन्नड, तमिल, तेलुगू, मलयालम, बंगला, असमिया, मराठी, और गुजराती भाषाए भी हिंदी की शादीर्ग बना दी जाती है। मगर यह सब होता कैसे हैं? यह एक बड़ा सवाल हैं। इस सवाल को समाजने के लिए बाज़ार और बाज़ार के शष्ट्र को समाजना होगा।

भारत मैं बाज़ार आजकल हमारी भाषा में रचा जा रहा हैं। हमारी जीवन की आवश्यकताओ का निर्णय अब हम नहीं करते, कंपनीय करती हैं। हम क्या खाये-क्या पिए, हम क्या ओड़े- क्या बिछाए, हम कहा खर्चे- कहा लगाए- इन सबका जिम्मा अब कंपनीओ ने उठा लिया हैं। और यह सब हो रहा हैं सबकी जुबान मैं। हमारी भाषा के बल पर। हमे ब्रमीत कर। विज्ञापनो की चकचोंध मैं उलजा कर कोई पराई भाषा, दूर देश की भाषा हमारी चेतना को इस कदर कुंद कर ही नहीं सकती की हम अपना दौनदिन फैसला भी उसके बूते उसके प्रभाव मैं करने लगे। भारतीय भाषाओ के विज्ञापनो की तुलना मैं अँग्रेजी चैनलो और विदेशी चैनलो पर बढते हिंदी कार्यक्रम भी हमारी भाषा की व्यापारिक और वाणिज्यिक ताकत का बयान कअरते हैं।

भाषा के सहारे के बिना बाजारिकरण का परिबेश निर्मित नहीं कीया जा सकता। उपभोगता की संवेदनाओ को छूए बिना मनमाने उत्पादो का विपणन किया ही नहीं जा सकता। कंपनियो ने और बाज़ार के नियंताओ ने भाषा की इस अमोध ताकत को समाज लिया हैं। नतीजतन, भारत ने और बाज़ार के नियंताओ ने भाषा की इस अमोध ताकत को समाज लिया हैं। नतीजतन, भारत मैं कारोबार फैलाने की इच्छा रखने वाली विदेशी कंपनीया अब अपने प्रबन्धको को हिंदी सिखाने लगी हैं। कई विदेशी कंपनियों ने तो अपने प्रबन्धक भी यहा भारतीयो को ही बना रखा हैं।इससे भारतीय ग्राहको की झारूरतों को समाजने मैं कंपनीया सक्षम हो रही हैं और उनके साथ बेहतर तालमेल बैठा रही हैं।

इसलिए वैश्वीकरण के इस दौर मैं अँग्रेजी का जो वर्चश्व अचानक बड़ा हुआ प्रतीत हो रहा हैं, वह भयकारी कतई नहीं हैं। भाषा की संवेदनात्मक शक्ति की परख रखने वाले और बाज़ार का रहस्य जानने वाले लोग बखूबी समजते हैं की यह समय हिंदी जैसी जनभाषा को सीमित और संकुचित करने का नहीं हैं, बल्कि हिंदी की शक्ति और सामर्थ्य मैं प्रसार लाने वाला हैं। क्योकि हिंदी भारत जैसे विशाल देश की प्रमुख संपर्क भाषा हैं। इसे भारत के

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

लगभग अस्सी करोड़ लोग जानते या समजते हैं। साथ ही हिंदी जानने वाले लोग आज दुनिया भर मैं फैले हुए हैं। प्रसार की दृष्टि से यह दुनिया की सबसे बड़ी भाषा बनती जा रही हैं, जबकि अंग्रेजी का स्थान चीनी भाषा के बाद यानि तीसरे नंबर पर आता हैं।

हिंदी स्वभाव से जनभाषा और स्वरूप मैं सर्वग्राही भाषा हैं। इसलिए भारत के दूस्दूर तक फैले परदेशो मैं बोली जाने वाली हिंदी का स्वरूप अलग-अलग हैं। ऐसा क्षेत्रीय भाषाओ और स्थानीय बोलियो के प्रभाव के कारण हैं। ऐसा भिन्न-भिन्न भाषाओ की भिन्न-भिन्न शब्दावलियों के हिंदी मैं घुलने-मिलने और उनके व्याकरणिक प्रभाव के कारण भी हैं।

असल मैं हिंदी के नाना स्वरूप हिंदी की ही शैलिया हैं। इन्हे एक-दूसरी से अलग करके नहीं देखा जा सकता। और इस कारण बंबइया हिंदी, कलकतीया हिंदी, या मद्राशी हिंदी को एक दूसरे का विरोधी नहीं माना जा सकता। लेकिन शुद्धतावादियों के नाकभों सिकोड़ने का कारण यह जरूर बन जाती हैं।

इससे हिंदी के विकास मैं बढ़ा आती हैं। वैश्वीकरन के जमाने मैं हमे ऐसी मीन-मेखी प्रवृत्ति से बचना होगा।

इसी कड़ी मैं 'अनुवादि हिंदी' की चुनोटी से भी निपटना होगा। अनुवाद की भूमिका भाषा की संपन्नता और समृद्धि मैं सहकारी होता हैं। पर हिंदी मई प्रयरु ऐसा नहीं हैं। इस चुनौती से निपटने में हिंदी अनुवादको के लिए अपने महत्तर दायित्व का ध्यान रखना ज़रूरी हैं। आखिर इस विसंगति को हमे खत्म करना ही होगा की अनुवादि हिंदी, खासकर प्रशासनिक कार्य-व्यवहार की हिंदी अबूझ न हो, बल्कि सरल, सहज, और ग्राह्य हो।

सहज और ग्राह्य प्रशासनिक हिंदी के लिए आवश्यक हैं की देश भर मैं सरकारी कार्यालयो के अनुवाद से जुड़े कार्मिको को हिंदी कंकाज के साथ दूसरे विभागो से भी आधिकारिक तौर पर जोड़ा जाए। इससे हिंदी कार्यान्वयन से जुड़े कार्मिक अनुवाद करने के बजाय सीधे हिंदी मैं मूल लेखन करने लागेगे, जो सरल भी होगा होगा और ग्राह्य भी। याद रहे की आम आदमी को राजभाषा का नहीं, बल्कि जनभाषा का स्वरूप की कार्यालया और प्रशाशन के निकट लाएगा। जनतंत्र की सफलता जन को तंत्र से विलग रखने मैं नहीं, बल्कि निकट लाने में निहित हैं।

वैश्वीकरण के इस दौर मैं सरकारी नीति और नियमो से ज़्यादा असरदार मनुष्य समाज की आपसदारी, बाज़ार की शर्ते और संचार माध्यम हैं। हिंदी मैं वेब पोर्टल का विकास और तरह-तरह के सॉफ्टवेर का निर्माण हिंदी की शक्ति और अपरिहार्यता के प्रतीक हैं। हिंदी का उपयोगिता आधारित विकास निरंतर जारी हैं। प्रिंट और इलेक्ट्रोनिक मीडिया के साथ-साथ

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

विज्ञापनकी की जरूरतों और उपभोगता वस्तुओ का संसार हिन्दी को तेज़ी से बादल रहा हैं। इस प्रक्रिया मैं हिंदी नित नूतन अभिव्यक्तियो से आपूरित हो रही हैं। हिंदी के इस स्वरूप से उसके शुद्धतावादी समर्थको को एतराज हो सकता है। मगर हिंदी के इस स्वरूप से उसके शुद्धतावादी समर्थको को एतराज हो सकता है।मगर हिंदी के इस उपभोक्तावादी रूप-निर्माण से भी सार्थक और महत्वपूर्ण वह विकास हैं, जो ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र मैं कही मंथर तो कही तेज़ गति से जारी हैं।

हिंदी प्रेमी वीद्धत-समूह यथार्थवादी नज़रिये और अपने सतत प्रयास से हिंदी को समजनीति, राजनीति, प्रशासन, पर्यावरण, विज्ञान, और प्रौधोगिकी के स्वपन और आकांशा को व्यकत करने के योग्य बना रहा हैं। भले ये विकास सतह पर नज़र न आए, पर यह वास्तविकता हैं। यह वास्तविकता हिंदी की अंतवस्तु मे जो सहयोग और सहकार की भावना हैं, उसका परिणाम हैं। लिहाजा, आज हैंडी मैं गर्व करने लायक उसका सृजनात्मक साहित्य ही नहीं हैं, बल्कि ज्ञान-विज्ञान की भिन्न-भिन्न शाखाओ से संबंद्ध वे महत्वपूर्ण अनुवाद्कार्य भी हैं, जो परिपूरक, प्रासंगिक और समय सिद्ध हैं।

बावजूद इसके इन्टरनेट पर हिंदी की स्थिति अच्छी नहीं हैं। विडंबना यह हैं की विश्व में तीन सबसे अधिक बोली-समजी जाने वाली भाषाओ में शुमार होने के बावजूद हिंदी इंटरनेट पर काम आने वाली दस प्रमुख भाषाओ में भी नहीं हैं। इंटरनेट वर्ल्डस्टेटस डॉट कॉम के सर्वेक्षण के अनुसार, विश्व भर में बोली जाने वाली करीब छह हज़ार भाषाओ और बोलियो में केवल बारह भाषाए एसी हे जिनमे अठानवे फीसद वेब सामाग्री नेट पर देखि और पड़ी जा सकती हैं। इनमे एंग्रेज़ी अग्रणी हैं। साथ ही साथ हिंदी सही मैने मैं जीवन संग्राम की भाषा बन सकेगी। सभ्यताओ में समन्वय और सहयोग से विकसित हुई हैं। हिंदी की यही शक्ति प्रारम्भ से ही सभ्यताओ में समन्वय और सहयोग से विकसित हुई हैं। हिंदी की यही शक्ति हैं और इस शक्ति का स्त्रोत जनता की आकांशा और सपने रहे हैं। भविष्य की हिंदी के स्वरूप का आभास अब मिलने लगा हैं। पर हिंदी का भविष्य की हिंदी के स्वरूप का आभास अब मिलने लगा हैं। पर हिंदी का भविष्य इससे भी ज्यादा आश्वस्तकारी हैं। अलबता बाजारवाद से ज्यादा शक्तिशाली राष्ट्रवाद होता हें।

भारत का आज का विकास भारत-राष्ट्रराज्य के सुनहरे भविष्य का संकेत करता हैं। भारतीय राष्ट्रवाद जैसे-जैसे सशक्त होता जाएगा, भाषाई राष्ट्रवाद वैसे-वैसे निखार पाता जाएगा। जनतंत्र का क्षेत्रीय विस्तार दिखाई देने लगा हैं। सिंहासन पर जनता की भागीदारी बढने लगी हैं। बीते वर्ष में दुनिया के कोनेकोने में हुए जनादोलन और उनकी सफलता के लहराते परचम इसके सबूत हैं। यही विस्तार हिंदी के भविष्य को सशक्त करेगा।

Saarth
E-Journal of Research
ISSN NO: 2395-339X

हमे अपने बदलते समय की अपेक्षाओ के अनुरूप हिंदी का परिवर्धतन और संवर्धतन करना होगा। फौरी तौर पर हिंदी का एक एस शब्दकोश तो बना ही लेना होगा, जो ओक्स्फ़र्ड इंग्लिश डिक्शनरी के स्तर का व्यापक, अर्थ और संदर्भों से परिपूर्ण, पारिभाषिक शब्दावली और संकल्पनाओ से युक्त और अधतन होते रहने की गारंटी वाला हो। इन सबके मद्देनजर अपने भाषाओ के लिए स्वयंसेवक सरीखा कुछ-न-कुछ करना अत्यंत ज़रूरी हैं। अगर हम यह नहीं कर सके तो वैश्विकरण की आँधी में अँग्रेजी का मुक़ाबला कतई नहीं कर सकेंगे।

विकसित दुनिया का लक्ष्य स्पष्ट हैं। वह और संपन्न होना चाहती हैं। साथ ही अपने नागरिकों के जीवन-स्तर को और उन्नत बनाना चाहती हैं। इसके लिए वह कुछ भी करने को तत्पर हैं। उनके लिए भारत एक बहुत बड़ा बाज़ार हैं। भारत में उसे अपने माल और सेवाओ की खपत की अपार संभावनाए दिखाई देती हैं। इसलिए उसने शुरू कर दिया हैं हम तक पहुचने के लिए हमारी भाषाओ का आध्ययन। माइक्रोसॉफ्ट द्वारा हिंदी, कन्नड, तेलुगू, तमिल, ओध्या, बांग्ला, आदि भाषाओ में कामकाज का सॉफ्टवेर विकसित करना इसका प्रमाण हैं। न्यूयॉर्क की कंपनी ओरियंटल डॉट कॉम द्वारा हिंदी वेब टूल्स बाज़ार में उतारना इसी का नतीजा हैं। भारत को अगर विकसित बनाना हैं तो हम यह सब कब शुरू करेंगे। अभी क्यो नहीं?